مِنْهُمْ وَاسْتَغْفِرْ لَهُمُ اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٦٢﴾ لَا تَجْعَلُوْا

दे दो और उन के लिये अल्लाह से मुआ़फ़ी मांगो[153] बेशक अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है रसूल के

دُعَآءَ الرَّسُوْلِ بَيْنَكُمْ كَدُعَآءِ بَعْضِكُمْ بَعْضًا ؕ قَدْ يَعْلَمُ اللّٰهُ الَّذِيْنَ

पुकारने को आपस में ऐसा न ठहरा लो जैसा तुम में एक दूसरे को पुकारता है[154] बेशक अल्लाह जानता है जो

يَتَسَلَّلُوْنَ مِنْكُمْ لِوَاذًا ۚ فَلْيَحْذَرِ الَّذِيْنَ يُخَالِفُوْنَ عَنْ اَمْرِهٖۤ اَنْ

तुम में चुपके निकल जाते हैं किसी चीज़ की आड़ ले कर[155] तो डरें वोह जो रसूल के हुक्म के ख़िलाफ़ करते हैं कि

تُصِيْبَهُمْ فِتْنَةٌ اَوْ يُصِيْبَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٦٣﴾ اَلَاۤ اِنَّ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ

उन्हें कोई फ़ितना पहुंचे[156] या उन पर दर्दनाक अ़ज़ाब पड़े[157] सुन लो बेशक अल्लाह ही का है जो कुछ आस्मानों

وَ الْاَرْضِ ؕ قَدْ يَعْلَمُ مَاۤ اَنْتُمْ عَلَيْهِ ؕ وَيَوْمَ يُرْجَعُوْنَ اِلَيْهِ

और ज़मीन में है बेशक वोह जानता है जिस ह़ाल पर तुम हो[158] और उस दिन को जिस में उस की त़रफ़ फेरे जाएंगे[159]

ع ١٥ فَيُنَبِّئُهُمْ بِمَا عَمِلُوْا ؕ وَاللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ﴿٦٤﴾

तो वोह उन्हें बता देगा जो कुछ उन्हों ने किया और अल्लाह सब कुछ जानता है[160]

اٰياتها ٧٧ | ٢٥ سُوْرَةُ الْفُرْقَانِ مَكِّيَّةٌ ٤٢ | رکوعاتها ٦

सूरए फ़ुरक़ान मक्किय्या है, इस में सतत्तर आयतें और छ[6] रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़्म वाला[1]

जंग और जुमुआ़ व ईदैन और मश्वरा और हर इज्तिमाअ़ जो अल्लाह के लिये हो। **152 :** उन का इजाज़त चाहना निशाने फ़रमां बरदारी और दलीले सिह़्ह़ते ईमान है। **153 :** इस से मा'लूम हुवा कि अफ़्ज़ल येही है कि ह़ाज़िर रहें और इजाज़त त़लब न करें। **मस्अला :** इमामों और दीनी पेश्वाओं की मजलिस से भी बे इजाज़त न जाना चाहिये। (مدارک) **154 :** क्यूं कि जिस को रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم पुकारें उस पर इजाबत व ता'मील वाजिब हो जाती है और अदब से ह़ाज़िर होना लाज़िम होता है और क़रीब ह़ाज़िर होने के लिये इजाज़त त़लब करे और इजाज़त से ही वापस हो। और एक मा'ना मुफ़स्सिरीन ने येह भी बयान फ़रमाए हैं कि रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को निदा करे तो अदबो तक्रीम और तौक़ीरो ता'ज़ीम के साथ, आप के मुअ़ज़्ज़म अल्क़ाब से, नर्म आवाज़ के साथ, मुतवाज़िआ़ना व मुन्कसिराना लहजे में "या नबिय्यल्लाह, या रसूलल्लाह, या ह़बीबल्लाह" कह कर। **155 : शाने नुज़ूल :** मुनाफ़िक़ीन पर रोज़े जुमुआ़ मस्जिद में ठहर कर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के ख़ुत्बे का सुनना गिरां होता था तो वोह चुपके चुपके आहिस्ता आहिस्ता सह़ाबा की आड़ ले कर सरक्ते सरक्ते मस्जिद से निकल जाते थे। इस पर येह आयत नाज़िल हुई। **156 :** दुन्या में तक्लीफ़ या क़त्ल या ज़ल्ज़ले या और होलनाक ह़वादिस या ज़ालिम बादशाह का मुसल्लत़ होना या दिल का सख़्त हो कर मा'रिफ़ते इलाही से महरूम रहना। **157 :** आख़िरत में। **158 :** ईमान पर या निफ़ाक़ पर। **159 :** जज़ा के लिये, और वोह दिन रोज़े क़ियामत है। **160 :** उस से कुछ छुपा नहीं। **1 :** सूरए फ़ुरक़ान मक्किय्या है, इस में छ[6] रुकूअ़ और सतत्तर आयतें और आठ सो बानवे कलिमे और तीन हज़ार सात सो तीन ह़र्फ़ हैं।

www.dawateislami.net

تَبٰرَكَ الَّذِیْ نَزَّلَ الْفُرْقَانَ عَلٰی عَبْدِهٖ لِیَكُوْنَ لِلْعٰلَمِیْنَ نَذِیْرَا ۙ﴿۱﴾

बड़ी बरकत वाला है वोह कि जिस ने उतारा कुरआन अपने बन्दे पर[2] जो सारे जहान को डर सुनाने वाला हो[3]

الَّذِیْ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ وَ لَمْ یَتَّخِذْ وَلَدًا وَّ لَمْ یَكُنْ

वोह जिस के लिये है आस्मानों और ज़मीन की बादशाहत और उस ने न इख़्तियार फ़रमाया बच्चा[4] और उस की

لَّهٗ شَرِیْكٌ فِی الْمُلْكِ وَ خَلَقَ كُلَّ شَیْءٍ فَقَدَّرَهٗ تَقْدِیْرًا ﴿۲﴾

सल्तनत में कोई साझी (शरीक) नहीं[5] उस ने हर चीज़ पैदा कर के ठीक अन्दाज़े पर रखी

وَ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖۤ اٰلِهَةً لَّا یَخْلُقُوْنَ شَیْـٴًـا وَّ هُمْ یُخْلَقُوْنَ وَ لَا

और लोगों ने उस के सिवा और खुदा ठहरा लिये[6] कि वोह कुछ नहीं बनाते और खुद पैदा किये गए हैं और

یَمْلِكُوْنَ لِاَنْفُسِهِمْ ضَرًّا وَّ لَا نَفْعًا وَّ لَا یَمْلِكُوْنَ مَوْتًا وَّ لَا حَیٰوةً

खुद अपनी जानों के बुरे भले के मालिक नहीं और न मरने का इख़्तियार न जीने का

وَّ لَا نُشُوْرًا ﴿۳﴾ وَ قَالَ الَّذِیْنَ كَفَرُوْۤا اِنْ هٰذَاۤ اِلَّاۤ اِفْكُ ِۨ افْتَرٰىهُ

न उठने का और काफ़िर बोले[7] येह तो नहीं मगर एक बोहतान जो उन्हों ने बना लिया है[8]

وَ اَعَانَهٗ عَلَیْهِ قَوْمٌ اٰخَرُوْنَ ۛۚ فَقَدْ جَآءُوْ ظُلْمًا وَّ زُوْرًا ۚۛ﴿۴﴾ وَ قَالُوْۤا معانقة ١٠

और इस पर और लोगों ने[9] उन्हें मदद दी है बेशक वोह[10] ज़ुल्म और झूट पर आए और बोले[11]

اَسَاطِیْرُ الْاَوَّلِیْنَ اكْتَتَبَهَا فَهِیَ تُمْلٰی عَلَیْهِ بُكْرَةً وَّ اَصِیْلًا ﴿۵﴾ قُلْ

अगलों की कहानियां हैं जो उन्हों ने[12] लिख ली हैं तो वोह उन पर सुब्हो शाम पढ़ी जाती हैं तुम फ़रमाओ

---

2 : या'नी सय्यिदे अम्बिया मुहम्मद मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم पर । **3 :** इस में हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم के उ़मूमे रिसालत का बयान है कि आप तमाम ख़ल्क़ की त़रफ़ रसूल बना कर भेजे गए जिन्न हों या बशर या फ़िरिश्ते या दीगर मख़्लूक़ात सब आप के उम्मती हैं क्यूं कि "आ़लम" मा सिवा अल्लाह को कहते हैं इस में येह सब दाख़िल हैं, मलाएका को इस से ख़ारिज करना जैसा कि जलालैन में शैख़ महल्ली से और कबीर में इमामे राज़ी से और शुअ़बुल ईमान में बैहक़ी से सादिर हुवा बे दलील है और दा'वए इज्माअ़ ग़ैर साबित, चुनान्चे इमाम सुबकी व बाज़िरी व इब्ने ह़ज़्म व सुयूत़ी ने इस का तआ़क़ुब किया और खुद इमामे राज़ी को तस्लीम है कि आ़लम मा सिवा अल्लाह को कहते हैं, पस वोह तमाम ख़ल्क़ को शामिल है मलाएका को इस से ख़ारिज करने पर कोई दलील नहीं, इलावा बरीं मुस्लिम शरीफ़ की ह़दीस में है : اُرْسِلْتُ اِلَی الْخَلْقِ كَافَّةً या'नी मैं तमाम ख़ल्क़ की त़रफ़ रसूल बना कर भेजा गया । अ़ल्लामा अ़ली क़ारी ने मिर्क़ात में इस की शर्ह़ में फ़रमाया : या'नी तमाम मौजूदात की त़रफ़ जिन्न हों या इन्सान या फ़िरिश्ते या हैवानात या जमादात । इस मस्अले की कामिल तन्क़ीह़ व तह़क़ीक़ शर्ह़ व बस्त़ के साथ इमामे क़स्त़लानी की मवाहिबे लदुन्निय्या में है । **4 :** इस में यहूदो नसारा का रद है जो ह़ज़रते उ़ज़ैर व मसीह़ عَلَیْہِمَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को खुदा का बेटा कहते हैं । مَعَاذَ اللّٰہ **5 :** इस में बुत परस्तों का रद है जो बुतों को खुदा का शरीक ठहराते हैं । **6 :** या'नी बुत परस्तों ने बुतों को खुदा ठहराया जो ऐसे आ़जिज़ व बे क़ुदरत हैं **7 :** या'नी नज़्र बिन ह़ारिस और इस के साथी कुरआने करीम की निस्बत कि **8 :** या'नी सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने । **9 :** और लोगों से नज़्र बिन ह़ारिस की मुराद यहूदी थे और अ़द्दास व यसार वग़ैरा अहले किताब । **10 :** नज़्र बिन ह़ारिस वग़ैरा मुश्रिकीन जो येह बेहूदा बात कहने वाले थे । **11 :** वोही मुश्रिकीन कुरआने करीम की

www.dawateislami.net

اَنْزَلَهُ الَّذِیْ یَعْلَمُ السِّرَّ فِی السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ؕ اِنَّهٗ كَانَ غَفُوْرًا

उसे तो उस ने उतारा है जो आस्मानों और ज़मीन की हर छुपी बात जानता है[13] बेशक वोह बख़्शने वाला

رَّحِیْمًا ﴿۶﴾ وَ قَالُوْا مَالِ هٰذَا الرَّسُوْلِ یَاْكُلُ الطَّعَامَ وَ یَمْشِیْ فِی

मेहरबान है[14] और बोले[15] इस रसूल को क्या हुवा खाना खाता है और बाज़ारों में

الْاَسْوَاقِ ؕ لَوْ لَاۤ اُنْزِلَ اِلَیْهِ مَلَكٌ فَیَكُوْنَ مَعَهٗ نَذِیْرًا ﴿۷﴾ اَوْ یُلْقٰۤی

चलता है[16] क्यूं न उतारा गया इन के साथ कोई फ़िरिश्ता कि इन के साथ डर सुनाता[17] या ग़ैब से

اِلَیْهِ كَنْزٌ اَوْ تَكُوْنُ لَهٗ جَنَّةٌ یَّاْكُلُ مِنْهَا ؕ وَ قَالَ الظّٰلِمُوْنَ اِنْ

इन्हें कोई ख़ज़ाना मिल जाता या इन का कोई बाग़ होता जिस में से खाते[18] और ज़ालिम बोले[19] तुम

تَتَّبِعُوْنَ اِلَّا رَجُلًا مَّسْحُوْرًا ﴿۸﴾ اُنْظُرْ كَیْفَ ضَرَبُوْا لَكَ الْاَمْثَالَ

तो पैरवी नहीं करते मगर एक ऐसे मर्द की जिस पर जादू हुवा[20] ऐ मह़बूब देखो कैसी कहावतें तुम्हारे लिये बना रहे हैं

ع ١ ٩ ١٦ فَضَلُّوْا فَلَا یَسْتَطِیْعُوْنَ سَبِیْلًا ﴿۹﴾ ع تَبٰرَكَ الَّذِیْۤ اِنْ شَآءَ جَعَلَ لَكَ

तो गुमराह हुए कि अब कोई राह नहीं पाते बड़ी बरकत वाला है वोह कि अगर चाहे तो तुम्हारे लिये

خَیْرًا مِّنْ ذٰلِكَ جَنّٰتٍ تَجْرِیْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۙ وَ یَجْعَلْ لَّكَ

बहुत बेहतर इस से कर दे[21] जन्नतें जिन के नीचे नहरें बहें और कर दे तुम्हारे लिये ऊंचे ऊंचे

قُصُوْرًا ﴿۱۰﴾ بَلْ كَذَّبُوْا بِالسَّاعَةِ ۫ وَ اَعْتَدْنَا لِمَنْ كَذَّبَ بِالسَّاعَةِ

मह़ल बल्कि येह तो क़ियामत को झुटलाते हैं और जो क़ियामत को झुटलाए हम ने उस के लिये तय्यार कर रखी है भड़क्ती हुई

سَعِیْرًا ﴿۱۱﴾ ج اِذَا رَاَتْهُمْ مِّنْ مَّكَانٍۭ بَعِیْدٍ سَمِعُوْا لَهَا تَغَیُّظًا وَّ زَفِیْرًا ﴿۱۲﴾

आग जब वोह उन्हें दूर जगह से देखेगी[22] तो सुनेंगे उस का जोश मारना और चिंघाड़ना

निस्बत कि येह रुस्तम व इस्फ़न्दयार वग़ैरा के क़िस्सों की तरह़ **12 :** या'नी सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने। **13 :** या'नी कुरआने करीम उ़लूमे ग़ैबी पर मुश्तमिल है। येह दलीले सरीह़ है इस की, कि वोह ह़ज़रते अ़ल्लामुल ग़ुयूब की त़रफ़ से है। **14 :** इसी लिये कुफ़्फ़ार को मोहलत देता है और अ़ज़ाब में जल्दी नहीं फ़रमाता। **15 :** कुफ़्फ़ारे क़ुरैश **16 :** इस से उन की मुराद येह थी कि आप नबी होते तो न खाते, न बाज़ारों में चलते और येह भी न होता तो **17 :** और इन की तस्दीक़ करता और इन की नुबुव्वत की शहादत देता। **18 :** मालदारों की त़रह़। **19 :** मुसल्मानों से **20 :** और مَعَاذَ الله उस की अ़क़्ल बजा न रही। ऐसी त़रह़ त़रह़ की बेहूदा बातें उन्हों ने बकीं। **21 :** या'नी जल्द आप को इस ख़ज़ाने और बाग़ से बेहतर अ़त़ा फ़रमावे जो येह काफ़िर कहते हैं। **22 :** एक बरस की राह से या सो बरस की राह से, दोनों क़ौल हैं और आग का देखना कुछ बई़द नहीं **अल्लाह** तआ़ला चाहे तो इस को ह़यात व अ़क़्ल और रूयत अ़त़ा फ़रमाए। और बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने कहा कि मुराद मलाइकए जहन्नम का देखना है।

www.dawateislami.net

وَ اِذَآ اُلْقُوْا مِنْهَا مَكَانًا ضَیِّقًا مُّقَرَّنِیْنَ دَعَوْا هُنَالِكَ ثُبُوْرًا ﴿۱۳﴾ؕ

और जब उस की किसी तंग जगह में डाले जाएंगे[23] ज़न्जीरों में जकड़े हुए[24] तो वहां मौत मांगेंगे[25]

لَا تَدْعُوا الْیَوْمَ ثُبُوْرًا وَّاحِدًا وَّ ادْعُوْا ثُبُوْرًا كَثِیْرًا ﴿۱۴﴾ قُلْ اَذٰلِكَ

फ़रमाया जाएगा आज एक मौत न मांगो और बहुत सी मौतें मांगो[26] तुम फ़रमाओ क्या येह[27]

خَیْرٌ اَمْ جَنَّةُ الْخُلْدِ الَّتِیْ وُعِدَ الْمُتَّقُوْنَؕ كَانَتْ لَهُمْ جَزَآءً

भला या वोह हमेशगी के बाग़ जिस का वा'दा डर वालों को है वोह उन का सिला

وَّ مَصِیْرًا ﴿۱۵﴾ لَهُمْ فِیْهَا مَا یَشَآءُوْنَ خٰلِدِیْنَؕ كَانَ عَلٰى رَبِّكَ وَعْدًا

और अन्जाम है उन के लिये वहां मन मानी मुरादें हैं जिन में हमेशा रहेंगे तुम्हारे रब के ज़िम्मे वा'दा है

مَّسْـُٔوْلًا ﴿۱۶﴾ وَ یَوْمَ یَحْشُرُهُمْ وَ مَا یَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ فَیَقُوْلُ

मांगा हुवा[28] और जिस दिन इकठ्ठा करेगा उन्हें[29] और जिन को अल्लाह के सिवा पूजते हैं[30] फिर उन मा'बूदों से फ़रमाएगा

ءَاَنْتُمْ اَضْلَلْتُمْ عِبَادِیْ هٰۤؤُلَآءِ اَمْ هُمْ ضَلُّوا السَّبِیْلَؕ ﴿۱۷﴾ قَالُوْا

क्या तुम ने गुमराह कर दिये येह मेरे बन्दे या येह खुद ही राह भूले[31] वोह अर्ज़ करेंगे

سُبْحٰنَكَ مَا كَانَ یَنْۢبَغِیْ لَنَاۤ اَنْ نَّتَّخِذَ مِنْ دُوْنِكَ مِنْ اَوْلِیَآءَ وَ

पाकी है तुझ को[32] हमें सज़ावार (हक़) न था कि तेरे सिवा किसी और को मौला बनाएं[33]

لٰكِنْ مَّتَّعْتَهُمْ وَ اٰبَآءَهُمْ حَتّٰى نَسُوا الذِّكْرَۚ وَ كَانُوْا قَوْمًۢا بُوْرًا ﴿۱۸﴾

लेकिन तू ने उन्हें और उन के बाप दादाओं को बरतने दिया[34] यहां तक कि वोह तेरी याद भूल गए और येह लोग थे ही हलाक होने वाले[35]

23 : जो निहायत कर्ब व बेचैनी पैदा करने वाली हो। **24 :** इस त़रह़ कि उन के हाथ गरदनों से मिला कर बांध दिये गए हों या इस त़रह़ कि हर हर काफ़िर अपने अपने शैत़ान के साथ ज़न्जीरों में जकड़ा हुवा हो। **25 :** और ''واثُبُوراه واثُبوراه'' का शोर मचाएंगे ब ई मा'ना कि हाए ऐ मौत आ जा। ह़दीस शरीफ़ में है कि पहले जिस शख़्स को आतिशी लिबास पहनाया जाएगा वोह इब्लीस है और इस की ज़ुर्रिय्यत इस के पीछे होगी और येह सब मौत मौत पुकारते होंगे उन से **26 :** क्यूं कि तुम त़रह़ त़रह़ के अ़ज़ाबों में मुब्तला किये जाओगे। **27 :** अ़ज़ाब और अह़वाले जहन्नम जिस का ज़िक्र किया गया। **28 :** या'नी मांगने के लाइक़ या वोह जो मोमिनीन ने दुन्या में येह अ़र्ज़ कर के मांगा : ''رَبَّنَا اٰتِنَا فِی الدُّنْیَا حَسَنَةً وَّفِی الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً'' या येह अ़र्ज़ कर के ''رَبَّنَا وَاٰتِنَا مَا وَعَدْتَّنَا عَلٰی رُسُلِكَ'' **29 :** या'नी मुश्रिकीन को **30 :** या'नी उन के बात़िल मा'बूदों को ख़्वाह ज़विल उ़क़ूल हों या ग़ैर ज़विल उ़क़ूल। कल्बी ने कहा कि उन मा'बूदों से बुत मुराद हैं, उन्हें अल्लाह तआ़ला गोयाई देगा। **31 :** अल्लाह तआ़ला ह़क़ीक़ते ह़ाल का जानने वाला है उस से कुछ भी मख़्फ़ी नहीं। येह सुवाल मुश्रिकीन को ज़लील करने के लिये है कि इन के मा'बूद इन्हें झुटलाएं तो इन की ह़सरत व ज़िल्लत और ज़ियादा हो। **32 :** इस से कि कोई तेरा शरीक हो। **33 :** तो हम दूसरे को क्या तेरे ग़ैर के मा'बूद बनाने का हुक्म दे सकते थे, हम तेरे बन्दे हैं। **34 :** और उन्हें अम्वाल व औलाद व तूले उ़म्र व सिह़ह़त व सलामत इनायत की **35 :** शक़ी, बा'दे अज़ीं कुफ़्फ़ार से फ़रमाया जाएगा।

www.dawateislami.net

فَقَدْ كَذَّبُوْكُمْ بِمَا تَقُوْلُوْنَ ۙ فَمَا تَسْتَطِيْعُوْنَ صَرْفًا وَّلَا نَصْرًا ۚ وَمَنْ

तो अब मा'बूदों ने तुम्हारी बात झुटला दी तो अब तुम न अ़ज़ाब फेर सको न अपनी मदद कर सको और तुम में

يَّظْلِمْ مِّنْكُمْ نُذِقْهُ عَذَابًا كَبِيْرًا ﴿١٩﴾ وَمَآ اَرْسَلْنَا قَبْلَكَ مِنَ

जो ज़ालिम है हम उसे बड़ा अ़ज़ाब चखाएंगे और हम ने तुम से पहले जितने

الْمُرْسَلِيْنَ اِلَّآ اِنَّهُمْ لَيَاْكُلُوْنَ الطَّعَامَ وَيَمْشُوْنَ فِي الْاَسْوَاقِ ؕ وَ

रसूल भेजे सब ऐसे ही थे खाना खाते और बाज़ारों में चलते[36] और

ع ٢ ١١ ١٧ جَعَلْنَا بَعْضَكُمْ لِبَعْضٍ فِتْنَةً ؕ اَتَصْبِرُوْنَ ۚ وَكَانَ رَبُّكَ بَصِيْرًا ﴿٢٠﴾ ع

हम ने तुम में एक को दूसरे की जांच किया है[37] और ऐ लोगो क्या तुम सब्र करोगे[38] और ऐ महबूब तुम्हारा रब देखता है[39]

36 : येह कुफ़्फ़ार के उस ता'न का जवाब है जो उन्हों ने सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم पर किया था कि वोह बाज़ारों में चलते हैं खाना खाते हैं, यहां बताया गया कि येह उमूर मुनाफ़िये नुबुव्वत नहीं बल्कि येह तमाम अम्बिया की आ़दते मुस्तमिर्रह थी, लिहाज़ा येह ता'न महज़ जहल व इ़नाद है। **37 शाने नुज़ूल :** शुरफ़ा जब इस्लाम लाने का क़स्द करते थे तो ग़ुरबा को देख कर येह ख़याल करते कि येह हम से पहले इस्लाम ला चुके इन को हम पर एक फ़ज़ीलत रहेगी, ब ई ख़याल वोह इस्लाम से बाज़ रहते और शुरफ़ा के लिये ग़ुरबा आज़्माइश बन जाते। और एक क़ौल येह है कि येह आयत अबू जहल व वलीद बिन उ़क़्बा और आ़स बिन वाइल सह्मी और नज़्र बिन ह़ारिस के ह़क़ में नाज़िल हुई, इन लोगों ने ह़ज़रते अबू ज़र व इब्ने मस्ऊ़द व अ़म्मार इब्ने यासिर व बिलाल व सुहैब व आ़मिर बिन फ़ुहैरा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم) को देखा कि पहले से इस्लाम लाए हैं तो ग़ुरूर से कहा कि हम भी इस्लाम ले आएं तो इन्हीं जैसे हो जाएंगे तो हम में और इन में फ़र्क़ क्या रह जाएगा। और एक क़ौल येह है कि येह आयत फ़ुक़राए मुस्लिमीन की आज़्माइश में नाज़िल हुई जिन का कुफ़्फ़ारे क़ुरैश इस्तिह्ज़ा करते थे और कहते थे कि सय्यिदे आ़लम मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم का इत्तिबाअ़ करने वाले येह लोग हैं जो हमारे ग़ुलाम और अरज़ल (ज़लील व ह़क़ीर) हैं। **अल्लाह** तआ़ला ने येह आयत नाज़िल की और उन मोमिनीन से फ़रमाया (خازن) **38 :** इस फ़क़्रो शिद्दत पर और कुफ़्फ़ार की इस बदगोई पर। **39 :** उस को जो सब्र करे और उस को जो बे सब्री करे।

www.dawateislami.net

وَقَالَ الَّذِيْنَ لَا يَرْجُوْنَ لِقَآءَنَا لَوْلَآ اُنْزِلَ عَلَيْنَا الْمَلٰٓئِكَةُ اَوْ نَرٰى

और बोले वोह लोग जो[40] हमारे मिलने की उम्मीद नहीं रखते हम पर फ़िरिश्ते क्यूं न उतारे[41] या हम अपने रब को

رَبَّنَا ؕ لَقَدِ اسْتَكْبَرُوْا فِيْۤ اَنْفُسِهِمْ وَعَتَوْ عُتُوًّا كَبِيْرًا ﴿۲۱﴾ يَوْمَ يَرَوْنَ

देखते[42] बेशक अपने जी में बहुत ही ऊंची खींची और बड़ी सरकशी पर आए[43] जिस दिन फ़िरिश्तों को

الْمَلٰٓئِكَةَ لَا بُشْرٰى يَوْمَئِذٍ لِّلْمُجْرِمِيْنَ وَيَقُوْلُوْنَ حِجْرًا مَّحْجُوْرًا ﴿۲۲﴾

देखेंगे[44] वोह दिन मुजरिमों की कोई ख़ुशी का न होगा[45] और कहेंगे इलाही हम में उन में कोई आड़ कर दे रुकी हुई[46]

وَقَدِمْنَاۤ اِلٰى مَا عَمِلُوْا مِنْ عَمَلٍ فَجَعَلْنٰهُ هَبَآءً مَّنْثُوْرًا ﴿۲۳﴾ اَصْحٰبُ

और जो कुछ उन्हों ने काम किये थे[47] हम ने क़स्द फ़रमा कर उन्हें बारीक बारीक गुबार के बिखरे हुए ज़र्रे कर दिया कि रोज़न की धूप में नज़र आते हैं[48] जन्नत

الْجَنَّةِ يَوْمَئِذٍ خَيْرٌ مُّسْتَقَرًّا وَّاَحْسَنُ مَقِيْلًا ﴿۲۴﴾ وَيَوْمَ تَشَقَّقُ السَّمَآءُ

वालों का उस दिन अच्छा ठिकाना[49] और हिसाब के दोपहर के बा'द अच्छी आराम की जगह और जिस दिन फट जाएगा आस्मान

بِالْغَمَامِ وَنُزِّلَ الْمَلٰٓئِكَةُ تَنْزِيْلًا ﴿۲۵﴾ اَلْمُلْكُ يَوْمَئِذِ ِالْحَقُّ لِلرَّحْمٰنِ ؕ

बादलों से और फ़िरिश्ते उतारे जाएंगे पूरी तरह[50] उस दिन सच्ची बादशाही रहमान की है

وَكَانَ يَوْمًا عَلَى الْكٰفِرِيْنَ عَسِيْرًا ﴿۲۶﴾ وَيَوْمَ يَعَضُّ الظَّالِمُ عَلٰى يَدَيْهِ

और वोह दिन काफ़िरों पर सख़्त है[51] और जिस दिन ज़ालिम अपने हाथ चबा चबा लेगा[52]

40 : काफ़िर हैं, हश्र व बअ्स के मो'तक़िद नहीं, इसी लिये 41 : हमारे लिये रसूल बना कर या सय्यिदे आ़लम मुहम्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की नुबुव्वत व रिसालत के गवाह बना कर 42 : वोह ख़ुद हमें ख़बर दे देता कि सय्यिदे आ़लम मुहम्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم उस के रसूल हैं। 43 : और उन का तकब्बुर इन्तिहा को पहुंच गया और सरकशी ह़द से गुज़र गई कि मो'जिज़ात का मुशाहदा करने के बा'द मलाएका के अपने ऊपर उतरने और अल्लाह तआ़ला को देखने का सुवाल किया। 44 : या'नी मौत के दिन या क़ियामत के दिन 45 : रोज़े क़ियामत फ़िरिश्ते मोमिनीन को बिशारत सुनाएंगे और कुफ़्फ़ार से कहेंगे तुम्हारे लिये कोई ख़ुश ख़बरी नहीं। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि फ़िरिश्ते कहेंगे कि मोमिन के सिवा किसी के लिये जन्नत में दाख़िल होना ह़लाल नहीं, इस लिये वोह दिन कुफ़्फ़ार के वासिते निहायत ह़स्रतो अन्दोह और रन्जो ग़म का दिन होगा। 46 : इस कलिमे से वोह मलाएका से पनाह चाहेंगे 47 : ह़ालते कुफ़्र में मिस्ल सिलए रेह़्मी व मेहमान दारी व यतीम नवाज़ी वग़ैरा के 48 : न हाथ से छूए जाएं न उन का साया हो, मुराद येह है कि वोह आ'माल बात़िल कर दिये गए उन का कुछ समरा और कोई फ़ाएदा नहीं क्यूं कि आ'माल की मक़्बूलिय्यत के लिये ईमान शर्त़ है और वोह उन्हें मुयस्सर न था, इस के बा'द अहले जन्नत की फ़ज़ीलत इर्शाद होती है। 49 : और उन की क़रार गाह उन मग़रूर मुतकब्बिर मुश्रिकों से बुलन्दो बाला बेहतर व आ'ला 50 : ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने फ़रमाया : आस्माने दुन्या फटेगा और वहां के रहने वाले (फ़िरिश्ते) उतरेंगे और वोह तमाम अहले ज़मीन से ज़ियादा हैं जिन्नो इन्स सब से। फिर दूसरा आस्मान फटेगा वहां के रहने वाले उतरेंगे वोह आस्माने दुन्या के रहने वालों से और जिन्नो इन्स सब से ज़ियादा हैं। इसी त़रह़ आस्मान फटते जाएंगे और हर आस्मान वालों की ता'दाद अपने मा तह़्तों से ज़ियादा है यहां तक कि सातवां आस्मान फटेगा फिर करूबी उतरेंगे फिर ह़ामिलीने अ़र्श और येह रोज़े क़ियामत होगा। 51 : और अल्लाह के फ़ज़्ल से मुसल्मानों पर सह्ल। ह़दीस शरीफ़ में है कि क़ियामत का दिन मुसल्मानों पर आसान किया जाएगा यहां तक कि वोह उन के लिये एक फ़र्ज़ नमाज़ से हलका होगा जो दुन्या में पढ़ी थी। 52 : ह़स्रतो नदामत से। येह ह़ाल अगर्चे कुफ़्फ़ार के लिये आ़म है मगर उ़क़्बा बिन अबी मुऐ़त़ से इस का ख़ास तअ़ल्लुक़ है। **शाने नुज़ूल :** उ़क़्बा बिन अबी मुऐ़त़ उबय बिन ख़लफ़ का गहरा दोस्ता था, हुज़ूर

www.dawateislami.net

يَقُوْلُ يٰلَيْتَنِي اتَّخَذْتُ مَعَ الرَّسُوْلِ سَبِيْلًا ﴿٢٧﴾ يٰوَيْلَتٰى لَيْتَنِيْ لَمْ

कि हाए किसी त़रह़ से मैं ने रसूल के साथ राह ली होती[53] वाए ख़राबी मेरी हाए किसी त़रह़ मैं ने

اَتَّخِذْ فُلَانًا خَلِيْلًا ﴿٢٨﴾ لَقَدْ اَضَلَّنِيْ عَنِ الذِّكْرِ بَعْدَ اِذْ جَآءَنِيْ ؕ وَ

फ़ुलाने को दोस्त न बनाया होता बेशक उस ने मुझे बहका दिया मेरे पास आई हुई नसीह़त से[54] और

كَانَ الشَّيْطٰنُ لِلْاِنْسَانِ خَذُوْلًا ﴿٢٩﴾ وَقَالَ الرَّسُوْلُ يٰرَبِّ اِنَّ قَوْمِي

शैत़ान आदमी को बे मदद छोड़ देता है[55] और रसूल ने अ़र्ज़ की कि ऐ मेरे रब मेरी क़ौम ने

اتَّخَذُوْا هٰذَا الْقُرْاٰنَ مَهْجُوْرًا ﴿٣٠﴾ وَكَذٰلِكَ جَعَلْنَا لِكُلِّ نَبِيٍّ عَدُوًّا مِّنَ

इस क़ुरआन को छोड़ने के क़ाबिल ठहरा लिया[56] और इसी त़रह़ हम ने हर नबी के लिये दुश्मन बना दिये थे

الْمُجْرِمِيْنَ ؕ وَكَفٰى بِرَبِّكَ هَادِيًا وَّنَصِيْرًا ﴿٣١﴾ وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا

मुजरिम लोग[57] और तुम्हारा रब काफ़ी है हिदायत करने और मदद देने को और काफ़िर बोले

مع لَوْلَا نُزِّلَ عَلَيْهِ الْقُرْاٰنُ جُمْلَةً وَّاحِدَةً ۚ كَذٰلِكَ ۚ لِنُثَبِّتَ بِهٖ

क़ुरआन उन पर एक साथ क्यूं न उतार दिया[58] हम ने यूंही ब तदरीज उसे उतारा है कि उस से तुम्हारा दिल

فُؤَادَكَ وَرَتَّلْنٰهُ تَرْتِيْلًا ﴿٣٢﴾ وَلَا يَاْتُوْنَكَ بِمَثَلٍ اِلَّا جِئْنٰكَ بِالْحَقِّ وَ

मज़बूत करें[59] और हम ने उसे ठहर ठहर कर पढ़ा[60] और वोह कोई कहावत तुम्हारे पास न लाएंगे[61] मगर हम ह़क़ और

सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के फ़रमाने से उस ने "لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ" की शहादत दी और इस के बा'द उबय बिन ख़लफ़ के ज़ोर डालने से फिर मुरतद हो गया और सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने उस को मक़्तूल होने की ख़बर दी। चुनान्चे बद्र में मारा गया येह आयत उस के ह़क़ में नाज़िल हुई कि रोज़े क़ियामत उस को इन्तिहा दरजे की ह़स्रतो नदामत होगी, इस ह़स्रत में वोह अपने हाथ चाब चाब लेगा। **53 :** जन्नत व नजात की और उन का इत्तिबाअ़ किया होता और उन की हिदायत क़बूल की होती **54 :** या'नी क़ुरआन व ईमान से **55 :** और बला व अ़ज़ाब नाज़िल होने के वक़्त उस से अ़लाह़दगी करता है। ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से अबू दावूद व तिरमिज़ी में एक ह़दीस मरवी है कि सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : आदमी अपने दोस्त के दीन पर होता है। तो देखना चाहिये किस को दोस्त बनाता है और ह़ज़रते अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : हम नशीनी न करो मगर ईमानदार के साथ और खाना न खिलाओ मगर परहेज़ गार को। **मस्अला :** बे दीन और बद मज़हब की दोस्ती और उस के साथ सोह़बत व इख़्तिलात़ और उल्फ़त व एह़तिराम मम्नूअ़ है। **56 :** किसी ने इस को सेह़्र कहा, किसी ने शे'र और वोह लोग ईमान लाने से महरूम रहे, इस पर **अल्लाह** तआ़ला ने हुज़ूर को तसल्ली दी और आप से मदद का वा'दा फ़रमाया जैसा कि आगे इर्शाद होता है। **57 :** या'नी अम्बिया के साथ बद नसीबों का येही मा'मूल रहा है। **58 :** जैसे कि तौरैत व इन्जील व ज़बूर में से हर एक किताब एक साथ उतरी थी। कुफ़्फ़ार का येह ए'तिराज़ बिल्कुल फ़ुज़ूल और मोह्मल है क्यूं कि क़ुरआने करीम का मो'जिज़ा व मुह़तज बिही होना हर ह़ाल में यक्सां है, चाहे यक्बारगी नाज़िल हो या ब तदरीज बल्कि ब तदरीज नाज़िल फ़रमाने में इस के ए'जाज़ का और भी कामिल इज़्हार है कि जब एक आयत नाज़िल हुई और तह़द्दी की गई और ख़ल्क़ का इस के मिस्ल बनाने से आ़जिज़ होना ज़ाहिर हुवा फिर दूसरी उतरी इसी त़रह़ इस का ए'जाज़ ज़ाहिर हुवा, इस त़रह़ बराबर आयत आयत हो कर क़ुरआने पाक नाज़िल होता रहा और हर हर दम इस की बे मिसाली और ख़ल्क़ की आ़जिज़ी ज़ाहिर होती रही। ग़रज़ कुफ़्फ़ार का ए'तिराज़ मह्ज़ लग़्व व बे मा'ना है, आयत में **अल्लाह** तआ़ला ब तदरीज नाज़िल फ़रमाने की ह़िक्मत ज़ाहिर फ़रमाता है। **59 :** और पयाम का सिल्सिला जारी रहने से आप के क़ल्बे मुबारक को तस्कीन होती रहे और कुफ़्फ़ार को हर हर मौक़अ़ पर जवाब मिलते रहें। इलावा बरीं येह भी फ़ाएदा है कि उस का ह़िफ़्ज़ सह्ल और आसान हो। **60 :** ब ज़बाने जिब्रील थोड़ा

www.dawateislami.net

اَحْسَنَ تَفْسِيْرًا ﴿٣٣﴾ اَلَّذِيْنَ يُحْشَرُوْنَ عَلٰى وُجُوْهِهِمْ اِلٰى جَهَنَّمَ ۙ

इस से बेहतर बयान ले आएंगे वोह जो जहन्नम की तरफ़ हांके जाएंगे अपने मुंह के बल

اُولٰٓئِكَ شَرٌّ مَّكَانًا وَّاَضَلُّ سَبِيْلًا ﴿٣٤﴾ ع وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ وَ ع ١٤ ١

उन का ठिकाना सब से बुरा[62] और वोह सब से गुमराह और बेशक हम ने मूसा को किताब अ़ता फ़रमाई और

جَعَلْنَا مَعَهٗۤ اَخَاهُ هٰرُوْنَ وَزِيْرًا ﴿٣٥﴾ فَقُلْنَا اذْهَبَاۤ اِلَى الْقَوْمِ الَّذِيْنَ

इस के भाई हारून को वज़ीर किया तो हम ने फ़रमाया तुम दोनों जाओ उस क़ौम की तरफ़ जिस ने

كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا ؕ فَدَمَّرْنٰهُمْ تَدْمِيْرًا ﴿٣٦﴾ وَقَوْمَ نُوْحٍ لَّمَّا كَذَّبُوا

हमारी आयतें झुटलाईं[63] फिर हम ने उन्हें तबाह कर के हलाक कर दिया और नूह़ की क़ौम को[64] जब उन्हों ने रसूलों को

الرُّسُلَ اَغْرَقْنٰهُمْ وَجَعَلْنٰهُمْ لِلنَّاسِ اٰيَةً ؕ وَاَعْتَدْنَا لِلظّٰلِمِيْنَ عَذَابًا

झुटलाया[65] हम ने उन को डुबो दिया और उन्हें लोगों के लिये निशानी कर दिया[66] और हम ने ज़ालिमों के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब तय्यार

اَلِيْمًا ﴿٣٧﴾ وَّعَادًا وَّثَمُوْدَا۠ وَاَصْحٰبَ الرَّسِّ وَقُرُوْنًۢا بَيْنَ ذٰلِكَ كَثِيْرًا ﴿٣٨﴾

कर रखा है और आ़द और समूद[67] और कूंएं वालों को[68] और इन के बीच में बहुत सी संगतें[69]

وَكُلًّا ضَرَبْنَا لَهُ الْاَمْثَالَ ۫ وَكُلًّا تَبَّرْنَا تَتْبِيْرًا ﴿٣٩﴾ وَلَقَدْ اَتَوْا عَلَى

और हम ने सब से मिसालें बयान फ़रमाईं[70] और सब को तबाह कर के मिटा दिया और ज़रूर येह[71] हो आए हैं उस

थोड़ा बीस या तेईस बरस की मुद्दत में, या येह मा'ना हैं कि हम ने आयत के बा'द आयत ब तदरीज नाज़िल फ़रमाई। और बा'ज़ ने कहा कि अल्लाह तआ़ला ने हमें क़िराअत में तरतील करने या'नी ठहर ठहर कर ब इत्मीनान पढ़ने और क़ुरआन शरीफ़ को अच्छी तरह़ अदा करने का हुक्म फ़रमाया जैसा कि दूसरी आयत में इर्शाद हुवा "وَرَتِّلِ الْقُرْاٰنَ تَرْتِيْلًا" **61 :** या'नी मुश्रिकीन आप के दीन के ख़िलाफ़ या आप की नुबुव्वत में क़दह़ (ऐ़बजूई) करने वाला कोई सुवाल पेश न कर सकेंगे। **62 :** ह़दीस शरीफ़ में है कि आदमी रोज़े क़ियामत तीन तरीक़े पर उठाए जाएंगे : **एक** गुरौह सुवारियों पर, **एक** गुरौह पियादा पा और **एक** जमाअ़त मुंह के बल घिसटती। अ़र्ज़ किया गया : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ! वोह मुंह के बल कैसे चलेंगे ? फ़रमाया : जिस ने पाउं पर चलाया है वोही मुंह के बल चलाएगा। **63 :** या'नी क़ौमे फ़िरऔ़न की तरफ़। चुनान्चे वोह दोनों ह़ज़रात उन की तरफ़ गए और उन्हें ख़ुदा का ख़ौफ़ दिलाया और अपनी रिसालत की तब्लीग़ की, लेकिन उन बद बख़्तों ने उन ह़ज़रात को झुटलाया। **64 :** भी हलाक कर दिया। **65 :** या'नी ह़ज़रते नूह़ और ह़ज़रते इदरीस को और ह़ज़रते शीस को या येह बात है कि एक रसूल की तक्ज़ीब तमाम रसूलों की तक्ज़ीब है तो जब उन्हों ने ह़ज़रते नूह़ को झुटलाया तो सब रसूलों को झुटलाया। **66 :** कि बा'द वालों के लिये इ़ब्रत हों। **67 :** और आ़द ह़ज़रते हूद عَلَيْهِ السَّلَام की क़ौम और समूद ह़ज़रते सालेह़ عَلَيْهِ السَّلَام की क़ौम, इन दोनों क़ौमों को भी हलाक किया। **68 :** येह ह़ज़रते शुऐ़ब عَلَيْهِ السَّلَام की क़ौम थी जो बुत परस्ती करते थे। अल्लाह तआ़ला ने उन की तरफ़ ह़ज़रते शुऐ़ब عَلَيْهِ السَّلَام को भेजा। आप ने उन्हें इस्लाम की दा'वत दी, उन्हों ने सरकशी की, ह़ज़रते शुऐ़ब عَلَيْهِ السَّلَام की तक्ज़ीब की और आप को ईज़ा दी। उन लोगों के मकान कूंएं के गिर्द थे। अल्लाह तआ़ला ने उन्हें हलाक किया और येह तमाम क़ौम मअ़ अपने मकानों के उस कूंएं के साथ ज़मीन में धंस गई। इस के इ़लावा और अक़्वाल भी हैं। **69 :** या'नी क़ौमे आ़द व समूद और कूंएं वालों के दरमियान में बहुत सी उम्मतें हैं जिन को अम्बिया की तक्ज़ीब करने के सबब से अल्लाह तआ़ला ने हलाक किया। **70 :** और हुज्जतें क़ाइम कीं और उन में से किसी को बिग़ैर इन्ज़ार हलाक न किया। **71 :** या'नी कुफ़्फ़ारे मक्का अपनी तिजारतों में शाम के सफ़र करते हुए बार बार।

www.dawateislami.net

الْقَرْيَةِ الَّتِيْۤ اُمْطِرَتْ مَطَرَ السَّوْءِ ؕ اَفَلَمْ يَكُوْنُوْا يَرَوْنَهَا ۚ بَلْ كَانُوْا

बस्ती पर जिस पर बुरा बरसाव बरसा था[72] तो क्या येह उसे देखते न थे[73] बल्कि उन्हें जी

لَا يَرْجُوْنَ نُشُوْرًا ﴿۴۰﴾ وَ اِذَا رَاَوْكَ اِنْ يَّتَّخِذُوْنَكَ اِلَّا هُزُوًا ؕ اَهٰذَا

उठने की उम्मीद थी ही नहीं[74] और जब तुम्हें देखते हैं तो तुम्हें नहीं ठहराते मगर ठठ्ठा (मज़ाक़)[75] क्या येह हैं

الَّذِيْ بَعَثَ اللّٰهُ رَسُوْلًا ﴿۴۱﴾ اِنْ كَادَ لَيُضِلُّنَا عَنْ اٰلِهَتِنَا لَوْلَاۤ اَنْ صَبَرْنَا

जिन को **अल्लाह** ने रसूल बना कर भेजा क़रीब था कि येह हमें हमारे ख़ुदाओं से बहका दें अगर हम इन पर सब्र न

عَلَيْهَا ؕ وَ سَوْفَ يَعْلَمُوْنَ حِيْنَ يَرَوْنَ الْعَذَابَ مَنْ اَضَلُّ سَبِيْلًا ﴿۴۲﴾

करते[76] और अब जाना चाहते हैं जिस दिन अ़ज़ाब देखेंगे[77] कि कौन गुमराह था[78]

اَرَءَيْتَ مَنِ اتَّخَذَ اِلٰهَهٗ هَوٰىهُ ؕ اَفَاَنْتَ تَكُوْنُ عَلَيْهِ وَكِيْلًا ﴿۴۳﴾ اَمْ

क्या तुम ने उसे देखा जिस ने अपने जी की ख़्वाहिश को अपना ख़ुदा बना लिया[79] तो क्या तुम उस की निगहबानी का ज़िम्मा लोगे[80] या

تَحْسَبُ اَنَّ اَكْثَرَهُمْ يَسْمَعُوْنَ اَوْ يَعْقِلُوْنَ ؕ اِنْ هُمْ اِلَّا كَالْاَنْعَامِ

येह समझते हो कि उन में बहुत कुछ सुनते या समझते हैं[81] वोह तो नहीं मगर जैसे चौपाए

ع ٢ بَلْ هُمْ اَضَلُّ سَبِيْلًا ﴿۴۴﴾ اَلَمْ تَرَ اِلٰى رَبِّكَ كَيْفَ مَدَّ الظِّلَّ ۚ وَلَوْ شَآءَ

बल्कि उन से भी बदतर गुमराह[82] ऐ मह़बूब क्या तुम ने अपने रब को न देखा[83] कि कैसा फैलाया साया[84] और अगर चाहता

72 : उस बस्ती से मुराद सदूम है जो क़ौमे लूत़ की पांच बस्तियों में सब से बड़ी बस्ती थी, उन बस्तियों में एक सब से छोटी बस्ती के लोग तो उस ख़बीस बदकारी के आ़मिल न थे जिस में बाक़ी चार बस्तियों के लोग मुब्तला थे। इसी लिये उन्हों ने नजात पाई और वोह चार बस्तियां अपनी बद अ़मली के बाइ़स आस्मान से पथ्थर बरसा कर हलाक कर दी गईं। **73 :** कि इ़ब्रत पकड़ते और ईमान लाते। **74 :** या'नी मरने के बा'द ज़िन्दा किये जाने के क़ाइल न थे कि उन्हें आख़िरत के सवाब व अ़ज़ाब की परवाह होती। **75 :** और कहते हैं : **76 :** इस से मा'लूम हुवा कि सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की दा'वत और आप के इज़्हारे मो'जिज़ात ने कुफ़्फ़ार पर इतना असर किया था और दीने ह़क़ को इस क़दर वाज़ेह़ कर दिया था कि ख़ुद कुफ़्फ़ार को इक़्रार है कि अगर वोह अपनी हट पर जमे न रहते तो क़रीब था कि बुत परस्ती छोड़ दें और दीने इस्लाम इख़्तियार करें या'नी दीने इस्लाम की ह़क़्क़ानिय्यत उन पर ख़ूब वाज़ेह़ हो चुकी थी और शुकूको शुबुहात मिटा डाले गए थे लेकिन वोह अपनी हट और ज़िद की वज्ह से मह़रूम रहे। **77 :** आख़िरत में **78 :** येह उस का जवाब है कि कुफ़्फ़ार ने येह कहा था कि क़रीब है कि येह हमें हमारे ख़ुदाओं से बहका दें, यहां बताया गया कि बहके हुए तुम ख़ुद हो और आख़िरत में येह तुम को ख़ुद मा'लूम हो जाएगा और रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की त़रफ़ बहकाने की निस्बत मह़ज़ बे जा है। **79 :** और अपनी ख़्वाहिशे नफ़्स को पूजने लगा, उसी का मुत़ीअ़ हो गया, वोह हिदायत किस त़रह़ क़बूल करेगा। मरवी है कि ज़मानए जाहिलिय्यत के लोग एक पथ्थर को पूजते थे और जब कहीं उन्हें कोई दूसरा पथ्थर उस से अच्छा नज़र आता तो पहले को फेंक देते और दूसरे को पूजने लगते। **80 :** कि ख़्वाहिश परस्ती से रोक दो **81 :** या'नी वोह अपने शिद्दते इ़नाद से न आप की बात सुनते हैं न दलाइल व बराहीन को समझते हैं, बहरे और ना समझ बने हुए हैं। **82 :** क्यूं कि चौपाए भी अपने रब की तस्बीह़ करते हैं और जो उन्हें खाने को दे उस के मुत़ीअ़ रहते हैं और एह़सान करने वाले को पहचानते हैं और तक्लीफ़ देने वाले से घबराते हैं, नाफ़ेअ़ की त़लब करते हैं, मुज़िर से बचते हैं, चरागाहों की राहें जानते हैं, येह कुफ़्फ़ार उन से भी बदतर हैं कि न रब की इत़ाअ़त करते हैं न उस के एह़सान को पहचानते हैं न शैत़ान जैसे दुश्मन की ज़रर रसानी को समझते हैं न सवाब जैसी अ़ज़ीमुल मन्फ़अ़त चीज़ के त़ालिब हैं न अ़ज़ाब जैसे सख़्त मुज़िर मोहलिका से बचते हैं। **83 :** कि उस की सन्अ़त व क़ुदरत कैसी अ़जीब है। **84 :** सुब्ह़े सादिक़ के तुलूअ़

www.dawateislami.net

لَجَعَلَهٗ سَاكِنًا ۚ ثُمَّ جَعَلْنَا الشَّمْسَ عَلَيْهِ دَلِيْلًا ۙ﴿۴۵﴾ ثُمَّ قَبَضْنٰهُ اِلَيْنَا

तो उसे ठहराया हुवा कर देता[85] फिर हम ने सूरज को इस पर दलील किया फिर हम ने आहिस्ता आहिस्ता उसे अपनी

قَبْضًا يَّسِيْرًا ﴿۴۶﴾ وَهُوَ الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ الَّيْلَ لِبَاسًا وَّالنَّوْمَ سُبَاتًا وَّ

त़रफ़ समेटा[86] और वोही है जिस ने रात को तुम्हारे लिये पर्दा किया और नींद को आराम और

جَعَلَ النَّهَارَ نُشُوْرًا ﴿۴۷﴾ وَهُوَ الَّذِيْۤ اَرْسَلَ الرِّيٰحَ بُشْرًۢا بَيْنَ يَدَيْ

दिन बनाया उठने के लिये[87] और वोही है जिस ने हवाएं भेजीं अपनी रह़मत के आगे

رَحْمَتِهٖ ۚ وَاَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَآءِ مَآءً طَهُوْرًا ۙ﴿۴۸﴾ لِّنُحْيِيَ بِهٖ بَلْدَةً مَّيْتًا وَّ

मुज़्दा सुनाती हुई[88] और हम ने आस्मान से पानी उतारा पाक करने वाला ताकि हम उस से ज़िन्दा करें किसी मुर्दा शह्र को[89] और

نُسْقِيَهٗ مِمَّا خَلَقْنَاۤ اَنْعَامًا وَّاَنَاسِيَّ كَثِيْرًا ﴿۴۹﴾ وَلَقَدْ صَرَّفْنٰهُ بَيْنَهُمْ

उसे पिलाएं अपने बनाए हुए बहुत से चौपाए और आदमियों को और बेशक हम ने उन में पानी के फेरे

لِيَذَّكَّرُوْا ۖ فَاَبٰۤى اَكْثَرُ النَّاسِ اِلَّا كُفُوْرًا ﴿۵۰﴾ وَلَوْ شِئْنَا لَبَعَثْنَا فِيْ كُلِّ

रखे[90] कि वोह ध्यान करें[91] तो बहुत लोगों ने न माना मगर नाशुक्री करना और हम चाहते तो हर बस्ती में

قَرْيَةٍ نَّذِيْرًا ﴿۵۱﴾ فَلَا تُطِعِ الْكٰفِرِيْنَ وَجَاهِدْهُمْ بِهٖ جِهَادًا كَبِيْرًا ﴿۵۲﴾

एक डर सुनाने वाला भेजते[92] तो काफ़िरों का कहा न मान और इस क़ुरआन से उन पर जिहाद कर बड़ा जिहाद

وَهُوَ الَّذِيْ مَرَجَ الْبَحْرَيْنِ هٰذَا عَذْبٌ فُرَاتٌ وَّهٰذَا مِلْحٌ اُجَاجٌ ۚ وَ

और वोही है जिस ने मिले हुए रवां किये दो समुन्दर येह मीठा है निहायत शीरीं और येह खारी है निहायत तल्ख़ और

جَعَلَ بَيْنَهُمَا بَرْزَخًا وَّحِجْرًا مَّحْجُوْرًا ﴿۵۳﴾ وَهُوَ الَّذِيْ خَلَقَ مِنَ الْمَآءِ

उन के बीच में पर्दा रखा और रोकी हुई आड़[93] और वोही है जिस ने पानी से[94] बनाया

के बा'द से आफ़्ताब के तुलूअ़ तक कि उस वक़्त तमाम ज़मीन में साया ही साया होता है न धूप है न अंधेरा है। **85 :** कि आफ़्ताब के तुलूअ़ से भी ज़ाइल न होता। **86 :** कि तुलूअ़ के बा'द आफ़्ताब जितना ऊंचा होता गया साया सिमटता गया। **87 :** कि इस में रोज़ी तलाश करो और कामों में मश्ग़ूल हो। ह़ज़रते लुक़्मान ने अपने फ़रज़न्द से फ़रमाया : जैसे सोते हो फिर उठते हो ऐसे ही मरोगे और मौत के बा'द फिर उठोगे। **88 :** यहां रह़मत से मुराद बारिश है **89 :** जहां की ज़मीन ख़ुश्की से बेजान हो गई **90 :** कि कभी किसी शह्र में बारिश हो कभी किसी में, कभी कहीं ज़ियादा हो कभी कहीं। मुख़्तलिफ़ त़ौर पर ह़स्बे इक़्तिज़ाए ह़िक्मत। एक ह़दीस में है कि आस्मान से रोज़ो शब की तमाम साअ़तों में बारिश होती रहती है **अल्लाह** तआ़ला उसे जिस ख़ित्ते की जानिब चाहता है फेरता है और जिस ज़मीन को चाहता है सैराब करता है। **91 :** और **अल्लाह** तआ़ला की क़ुदरत व ने'मत में ग़ौर करें **92 :** और आप पर से इन्ज़ार (डराने) का बार कम कर देते, लेकिन हम ने तमाम बस्तियों के इन्ज़ार का बार आप ही पर रखा ताकि आप तमाम जहान के रसूल हो कर कुल रसूलों की फ़ज़ीलतों के जामेअ़ हों और नुबुव्वत आप पर ख़त्म हो कि आप के बा'द फिर कोई नबी न हो **93 :** कि न मीठा खारी हो न खारी मीठा, न कोई किसी के ज़ाएक़े को बदल सके जैसे कि दिज्ला दरियाए शोर में मीलों तक चला

www.dawateislami.net

بَشَرًا فَجَعَلَهٗ نَسَبًا وَّصِهْرًا ؕ وَكَانَ رَبُّكَ قَدِيْرًا ﴿۵۴﴾ وَيَعْبُدُوْنَ مِنْ

आदमी फिर उस के रिश्ते और सुसराल मुक़र्रर की[95] और तुम्हारा रब क़ुदरत वाला है[96] और **अल्लाह** के सिवा ऐसों

دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَنْفَعُهُمْ وَلَا يَضُرُّهُمْ ؕ وَكَانَ الْكَافِرُ عَلٰى رَبِّهٖ ظَهِيْرًا ﴿۵۵﴾

को पूजते हैं[97] जो उन का भला बुरा कुछ न करें और काफ़िर अपने रब के मुक़ाबिल शैत़ान को मदद देता है[98]

وَمَاۤ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا مُبَشِّرًا وَّنَذِيْرًا ﴿۵۶﴾ قُلْ مَاۤ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ

और हम ने तुम्हें न भेजा मगर[99] ख़ुशी और[100] डर सुनाता तुम फ़रमाओ मैं इस[101] पर तुम से कुछ उजरत नहीं मांगता

اِلَّا مَنْ شَآءَ اَنْ يَّتَّخِذَ اِلٰى رَبِّهٖ سَبِيْلًا ﴿۵۷﴾ وَتَوَكَّلْ عَلَى الْحَيِّ الَّذِيْ

मगर जो चाहे कि अपने रब की त़रफ़ राह ले[102] और भरोसा करो उस ज़िन्दा पर जो

مع ٨ لَا يَمُوْتُ وَسَبِّحْ بِحَمْدِهٖ ؕ وَكَفٰى بِهٖ بِذُنُوْبِ عِبَادِهٖ خَبِيْرًا ۚۛ ﴿۵۸﴾

कभी न मरेगा[103] और उसे सराहते हुए उस की पाकी बोलो[104] और वोही काफ़ी है अपने बन्दों के गुनाहों पर ख़बरदार[105]

الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِيْ سِتَّةِ اَيَّامٍ ثُمَّ

जिस ने आस्मान और ज़मीन और जो कुछ उन के दरमियान है छ[6] दिन में बनाए[106] फिर

اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ ۛۚ اَلرَّحْمٰنُ فَسْـَٔلْ بِهٖ خَبِيْرًا ﴿۵۹﴾ وَاِذَا قِيْلَ لَهُمُ

अ़र्श पर इस्तिवा फ़रमाया जैसा उस की शान के लाइक़ है[107] वोह बड़ी मेहर (रह़मत) वाला तो किसी जानने वाले से उस की ता'रीफ़ पूछ[108] और जब उन से कहा जाए[109]

اسْجُدُوْا لِلرَّحْمٰنِ ؕ قَالُوْا وَمَا الرَّحْمٰنُ ۗ اَنَسْجُدُ لِمَا تَاْمُرُنَا وَزَادَهُمْ

रह़मान को सज्दा करो कहते हैं रह़मान क्या है क्या हम सज्दा कर लें जिसे तुम कहो[110] और इस हुक्म ने उन्हें और बिदक्ना

जाता है और उस के ज़ाएक़े में कोई तग़य्युर नहीं आता, अ़जब शाने इलाही है। **94 :** या'नी नुत़्फ़े से **95 :** कि नस्ल चले **96 :** कि उस ने एक नुत़्फ़े से दो क़िस्म के इन्सान पैदा किये मुज़क्कर और मुअन्नस, फिर भी काफ़िरों का येह ह़ाल है कि उस पर ईमान नहीं लाते। **97 :** या'नी बुतों को **98 :** क्यूं कि बुत परस्ती करना शैत़ान को मदद देना है **99 :** ईमान व त़ाअ़त पर जन्नत की **100 :** कुफ़्रो मा'सियत पर अ़ज़ाबे जहन्नम का **101 :** तब्लीग़ व इर्शाद **102 :** और उस का क़ुर्ब और उस की रिज़ा ह़ासिल करे, मुराद येह है कि ईमानदारों का ईमान लाना और उन का त़ाअ़ते इलाही में मश्ग़ूल होना ही मेरा अज्र है क्यूं कि **अल्लाह** तबारक व तआ़ला मुझे इस पर जज़ा अ़त़ा फ़रमाएगा, इस लिये कि सुलह़ाए उम्मत के ईमान और उन की नेकियों के सवाब उन्हें भी मिलते हैं और उन के अम्बिया को जिन की हिदायत से वोह इस रुत्बे पर पहुंचे। **103 :** उसी पर भरोसा करना चाहिये क्यूं कि मरने वाले पर भरोसा करना आ़क़िल की शान नहीं। **104 :** उस की तस्बीह़ व तह़मीद करो, उस की त़ाअ़त और शुक्र बजा लाओ। **105 :** न उस से किसी का गुनाह छुपे न कोई उस की गिरिफ़्त से अपने को बचा सके। **106 :** या'नी इतनी मिक़्दार में क्यूं कि लैलो नहार और आफ़्ताब तो थे ही नहीं और इतनी मिक़्दार में पैदा करना अपनी मख़्लूक़ को आहिस्तगी और इत़्मीनान की ता'लीम के लिये है, वरना वोह एक लम्ह़े में सब कुछ पैदा कर देने पर क़ादिर है। **107 :** सलफ़ का मज़हब येह है कि इस्तिवा और इस के अम्साल जो वारिद हुए हम उस पर ईमान रखते हैं और इस की कैफ़िय्यत के दरपै नहीं होते, इस को **अल्लाह** जाने। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन इस्तिवा को बुलन्दी और बरतरी के मा'ना में लेते हैं और बा'ज़ इस्तीला (ग़लबा) के मा'ना में लेकिन क़ौले अव्वल ही अस्लम व अक़्वा है। **108 :** इस में इन्सान को ख़िताब है कि ह़ज़रते रह़मान की सिफ़ात मर्दे आ़रिफ़ से दरयाफ़्त करे। **109 :** या'नी जब सय्यिदे आ़लम

www.dawateislami.net

نُفُوْرًا ﴿٦٠﴾ تَبٰرَكَ الَّذِيْ جَعَلَ فِي السَّمَآءِ بُرُوْجًا وَّ جَعَلَ فِيْهَا سِرٰجًا وَّ

बढ़ाया[111] बड़ी बरकत वाला है वोह जिस ने आस्मान में बुर्ज बनाए[112] और उन में चराग़ रखा[113] और

قَمَرًا مُّنِيْرًا ﴿٦١﴾ وَ هُوَ الَّذِيْ جَعَلَ الَّيْلَ وَ النَّهَارَ خِلْفَةً لِّمَنْ اَرَادَ

चमकता चांद और वोही है जिस ने रात और दिन की बदली रखी[114] उस के लिये

اَنْ يَّذَّكَّرَ اَوْ اَرَادَ شُكُوْرًا ﴿٦٢﴾ وَ عِبَادُ الرَّحْمٰنِ الَّذِيْنَ يَمْشُوْنَ عَلَى

जो ध्यान करना चाहे या शुक्र का इरादा करे और रह़मान के वोह बन्दे कि ज़मीन पर

الْاَرْضِ هَوْنًا وَّ اِذَا خَاطَبَهُمُ الْجٰهِلُوْنَ قَالُوْا سَلٰمًا ﴿٦٣﴾ وَ الَّذِيْنَ

आहिस्ता चलते हैं[115] और जब जाहिल उन से बात करते हैं[116] तो कहते हैं बस सलाम[117] और वोह जो

يَبِيْتُوْنَ لِرَبِّهِمْ سُجَّدًا وَّ قِيَامًا ﴿٦٤﴾ وَ الَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَا اصْرِفْ

रात काटते हैं अपने रब के लिये सज्दे और क़ियाम में[118] और वोह जो अ़र्ज़ करते हैं ऐ हमारे रब हम से

عَنَّا عَذَابَ جَهَنَّمَ ۖۗ اِنَّ عَذَابَهَا كَانَ غَرَامًا ﴿٦٥﴾ۖ اِنَّهَا سَآءَتْ مُسْتَقَرًّا

फेर दे जहन्नम का अ़ज़ाब बेशक उस का अ़ज़ाब गले का ग़ुल (फन्दा) है[119] बेशक वोह बहुत ही बुरी ठहरने की

صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم मुशरिकीन से फ़रमाएं कि **110 :** इस से उन का मक़्सद येह है कि रह़मान को जानते नहीं और येह बात़िल है जो उन्हों ने बराहे इनाद कहा क्यूं कि लुग़ते अ़रब जानने वाला ख़ूब जानता है कि रह़मान के मा'ना निहायत रह़्म वाला हैं और येह **अल्लाह** तआ़ला ही की सिफ़त है। **111 :** या'नी सज्दे का हुक्म उन के लिये और ज़ियादा ईमान से दूरी का बाइस हुवा। **112 :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि बुरूज से कवाकिबे सब्अ़ा सय्यारा के मनाज़िल मुराद हैं, जिन की ता'दाद बारह 12 है : ह़म्ल[1], सौर[2], जौज़ा[3], सरत़ान[4], असद[5], सुम्बुला[6], मीज़ान[7], अ़क़रब[8], क़ौस[9], जद्य[10], दल्व[11], हूत[12]। **113 :** चराग़ से यहां आफ़्ताब मुराद है। **114 :** कि उन में एक के बा'द दूसरा आता है और उस का क़ाइम मक़ाम होता है कि जिस का अ़मल रात या दिन में से किसी एक में क़ज़ा हो जाए तो दूसरे में अदा करे ऐसा ही फ़रमाया ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا ने और रात और दिन का एक दूसरे के बा'द आना और क़ाइम मक़ाम होना **अल्लाह** तआ़ला की क़ुदरत व ह़िक्मत की दलील है। **115 :** इत़्मीनान व वक़ार के साथ मुतवाज़ेआ़ना शान से, न कि मुतकब्बिराना त़रीक़े पर जूते खट खटाते पाउं ज़ोर से मारते इतराते कि येह मुतकब्बिरीन की शान है और शर्अ़ ने इस को मन्अ़ फ़रमाया। **116 :** और कोई ना गवार कलिमा या बेहूदा या ख़िलाफ़े अदब व तहज़ीब बात कहते हैं **117 :** येह सलामे मुतारकत है या'नी जाहिलों के साथ मुजादला करने से ए'राज़ करते हैं या येह मा'ना हैं कि ऐसी बात कहते हैं जो दुरुस्त हो और उस में ईज़ा और गुनाह से सालिम रहें। ह़सन बसरी ने फ़रमाया कि येह तो उन बन्दों के दिन का ह़ाल है और उन की रात का बयान आगे आता है। मुराद येह है कि उन की मजलिसी ज़िन्दगी और ख़ल्क़ के साथ मुआ़मला ऐसा पाकीज़ा है और उन की ख़ल्वत की ज़िन्दगानी और ह़क़ के साथ राबित़ा येह है जो आगे बयान फ़रमाया जाता है। **118 :** या'नी नमाज़ और इबादत में शब बेदारी करते हैं और रात अपने रब की इबादत में गुज़ारते हैं और **अल्लाह** तबारक व तआ़ला अपने करम से थोड़ी इबादत वालों को भी शब बेदारी का सवाब अ़त़ा फ़रमाता है। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि जिस किसी ने बा'दे इशा दो रक्अ़त या ज़ियादा नफ़्ल पढ़े वोह शब बेदारी करने वालों में दाख़िल है। मुस्लिम शरीफ़ में ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه से मरवी है जिस ने इशा की नमाज़ बा जमाअ़त अदा की उस ने निस्फ़ शब के क़ियाम का सवाब पाया और जिस ने फ़ज्र भी बा जमाअ़त अदा की वोह तमाम शब के इबादत करने वाले की मिस्ल है। **119 :** या'नी लाज़िम, जुदा न होने वाला। इस आयत में उन बन्दों की शब बेदारी और इबादत का ज़िक्र फ़रमाने के बा'द उन की इस दुआ़ का बयान किया, इस से येह इज़्हार मक़्सूद है कि वोह बा वुजूद कस्रते इबादत के **अल्लाह** तआ़ला का ख़ौफ़ रखते हैं और उस के ह़ुज़ूर तज़र्रोअ़ करते हैं।

وَّ مُقَامًا ﴿٦٦﴾ وَالَّذِيْنَ اِذَآ اَنْفَقُوْا لَمْ يُسْرِفُوْا وَلَمْ يَقْتُرُوْا وَكَانَ بَيْنَ

जगह है और वोह कि जब ख़र्च करते हैं न ह़द से बढ़ें और न तंगी करें[120] और इन दोनों के बीच

ذٰلِكَ قَوَامًا ﴿٦٧﴾ وَالَّذِيْنَ لَا يَدْعُوْنَ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ وَلَا يَقْتُلُوْنَ

ए'तिदाल पर रहें[121] और वोह जो **अल्लाह** के साथ किसी दूसरे मा'बूद को नहीं पूजते[122] और उस जान को

النَّفْسَ الَّتِيْ حَرَّمَ اللّٰهُ اِلَّا بِالْحَقِّ وَلَا يَزْنُوْنَ ۚ وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ

जिस की **अल्लाह** ने हुरमत रखी[123] नाह़क़ नहीं मारते और बदकारी नहीं करते[124] और जो येह काम करे

يَلْقَ اَثَامًا ﴿٦٨﴾ ۙ يُّضٰعَفْ لَهُ الْعَذَابُ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَيَخْلُدْ فِيْهٖ

वोह सज़ा पाएगा बढ़ाया जाएगा उस पर अ़ज़ाब क़ियामत के दिन[125] और हमेशा उस में ज़िल्लत से

مُهَانًا ﴿٦٩﴾ ۖ اِلَّا مَنْ تَابَ وَاٰمَنَ وَعَمِلَ عَمَلًا صَالِحًا فَاُولٰٓئِكَ يُبَدِّلُ

रहेगा मगर जो तौबा करे[126] और ईमान लाए[127] और अच्छा काम करे[128] तो ऐसों की बुराइयों को

اللّٰهُ سَيِّاٰتِهِمْ حَسَنٰتٍ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿٧٠﴾ وَمَنْ تَابَ وَ

अल्लाह भलाइयों से बदल देगा[129] और **अल्लाह** बख़्शने वाला मेहरबान है और जो तौबा करे और

عَمِلَ صَالِحًا فَاِنَّهٗ يَتُوْبُ اِلَى اللّٰهِ مَتَابًا ﴿٧١﴾ وَالَّذِيْنَ لَا يَشْهَدُوْنَ

अच्छा काम करे तो वोह **अल्लाह** की त़रफ़ रुजूअ़ लाया जैसी चाहिये थी और जो झूटी गवाही नहीं

120 : इसराफ़ मा'सियत में ख़र्च करने को कहते हैं। एक बुज़ुर्ग ने कहा कि इसराफ़ में भलाई नहीं। दूसरे बुज़ुर्ग ने कहा : नेकी में इसराफ़ ही नहीं। और तंगी करना येह है कि **अल्लाह** तआला के मुक़र्रर किये हुए हुक़ूक़ के अदा करने में कमी करे, येही ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رضی اللّٰہ تعالیٰ عنہما ने फ़रमाया। ह़दीस शरीफ़ में है : सय्यिदे आ़लम صلَّی اللّٰہ تعالیٰ علیہ وسلَّم ने फ़रमाया : जिस ने किसी ह़क़ को मन्अ़ किया उस ने इक़्तार किया या'नी तंगी की और जिस ने नाह़क़ में ख़र्च किया उस ने इसराफ़ किया। यहां उन बन्दों के ख़र्च करने का ह़ाल ज़िक्र फ़रमाया जाता है कि वोह इसराफ़ व इक़्तार के दोनों मज़मूम त़रीक़ों से बचते हैं। **121 :** अ़ब्दुल मलिक बिन मरवान ने ह़ज़रते उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رضی اللّٰہ تعالیٰ عنہ से अपनी बेटी बियाहते वक़्त ख़र्च का ह़ाल दरयाफ़्त किया तो ह़ज़रते उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رضی اللّٰہ تعالیٰ عنہ ने फ़रमाया कि नेकी दो बदियों के दरमियान है। इस से मुराद येह थी कि ख़र्च में ए'तिदाल नेकी है और वोह इसराफ़ व इक़्तार के दरमियान है जो दोनों बदियां हैं, इस से अ़ब्दुल मलिक ने पहचान लिया कि वोह इस आयत के मज़मून की त़रफ़ इशारा करते हैं। मुफ़स्सिरीन का क़ौल है कि इस आयत में जिन ह़ज़रात का ज़िक्र है वोह सय्यिदे आ़लम صلَّی اللّٰہ تعالیٰ علیہ وسلَّم के अस्ह़ाबे किबार हैं जो न लज़्ज़त व तनऊ़उम के लिये खाते, न ख़ूब सूरती और ज़ीनत के लिये पहनते, भूक रोकना सत्र छुपाना सरदी गरमी की तक्लीफ़ से बचना इतना उन का मक़्सद था। **122 :** शिर्क से बरी और बेज़ार हैं। **123 :** और उस का ख़ून मुबाह़ न किया जैसे कि मोमिन व मुआ़हिद उस को **124 :** सालिह़ीन से इन कबाइर की नफ़ी फ़रमाने में कुफ़्फ़ार पर ता'रीज़ है जो इन बदियों में गिरिफ़्तार थे। **125 :** या'नी वोह शिर्क के अ़ज़ाब में भी गिरिफ़्तार होगा और इन मआ़सी का अ़ज़ाब उस अ़ज़ाब पर और ज़ियादा किया जाएगा। **126 :** शिर्क व कबाइर से **127 :** सय्यिदे आ़लम صلَّی اللّٰہ تعالیٰ علیہ وسلَّم पर **128 :** या'नी बा'दे तौबा नेकी इख़्तियार करे **129 :** या'नी बदी करने के बा'द नेकी की तौफ़ीक़ दे कर या येह मा'ना कि बदियों को तौबा से मिटा देगा और उन की जगह ईमान व त़ाअ़त वग़ैरा नेकियां सब्त फ़रमाएगा। (مدارک) मुस्लिम की ह़दीस में है कि रोज़े क़ियामत एक शख़्स ह़ाज़िर किया जाएगा मलाएका ब हुक्मे इलाही उस के सग़ीरा गुनाह एक एक कर के उस को याद दिलाते जाएंगे वोह इक़रार करता जाएगा और अपने बड़े गुनाहों के पेश होने से डरता होगा। इस के बा'द कहा जाएगा कि हर एक बदी के इवज़ तुझ को नेकी दी गई। येह बयान फ़रमाते हुए सय्यिदे आ़लम

www.dawateislami.net

الزُّوْرَ ۙ وَ اِذَا مَرُّوْا بِاللَّغْوِ مَرُّوْا كِرَامًا ﴿۷۲﴾ وَ الَّذِيْنَ اِذَا ذُكِّرُوْا بِاٰيٰتِ

देते[130] और जब बेहूदा पर गुज़रते हैं अपनी इज़्ज़त संभाले गुज़र जाते हैं[131] और वोह कि जब कि उन्हें उन के रब की आयतें याद दिलाई

رَبِّهِمْ لَمْ يَخِرُّوْا عَلَيْهَا صُمًّا وَّ عُمْيَانًا ﴿۷۳﴾ وَ الَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَا

जाएं तो उन पर[132] बहरे अन्धे हो कर नहीं गिरते[133] और वोह जो अ़र्ज़ करते हैं ऐ हमारे रब

هَبْ لَنَا مِنْ اَزْوَاجِنَا وَ ذُرِّيّٰتِنَا قُرَّةَ اَعْيُنٍ وَّ اجْعَلْنَا لِلْمُتَّقِيْنَ

हमें दे हमारी बीबियों और हमारी औलाद से आंखों की ठन्डक[134] और हमें परहेज़ गारों का

اِمَامًا ﴿۷۴﴾ اُولٰٓئِكَ يُجْزَوْنَ الْغُرْفَةَ بِمَا صَبَرُوْا وَ يُلَقَّوْنَ فِيْهَا تَحِيَّةً

पेश्वा बना[135] उन को जन्नत का सब से ऊंचा बालाख़ाना इन्आ़म मिलेगा बदला उन के सब्र का और वहां मुजरे (दुआ़ व आदाब) और सलाम के साथ उन की पेश्वाई

وَّ سَلٰمًا ۙ ﴿۷۵﴾ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ حَسُنَتْ مُسْتَقَرًّا وَّ مُقَامًا ﴿۷۶﴾ قُلْ مَا يَعْبَؤُا بِكُمْ

होगी[136] हमेशा उस में रहेंगे क्या ही अच्छी ठहरने और बसने की जगह तुम फ़रमाओ[137] तुम्हारी कुछ क़द्र नहीं

رَبِّيْ لَوْ لَا دُعَآؤُكُمْ ۚ فَقَدْ كَذَّبْتُمْ فَسَوْفَ يَكُوْنُ لِزَامًا ﴿۷۷﴾ ع

मेरे रब के यहां अगर तुम उसे न पूजो तो तुम ने तो झुटलाया[138] तो अब होगा वोह अ़ज़ाब कि लिपट रहेगा[139]

الربع

اٰیاتها ٢٢٧ | ٢٦ سُوْرَةُ الشُّعَرَآءِ مَكِّيَّةٌ ٤٧ | رکوعاتها ١١

सूरए शुअ़राअ मक्किय्या है, इस में दो सो सत्ताईस आयतें और ग्यारह रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़्म वाला[1]

صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को **अल्लाह** तआ़ला की बन्दा नवाज़ी और उस की शाने करम पर ख़ुशी हुई और चेहरए अक़्दस पर सुरूर से तबस्सुम के आसार नुमायां हुए। **130 :** और झूटों की मजलिस से अ़लाह़दा रहते हैं और उन के साथ मुख़ालतत नहीं करते **131 :** और अपने आप को लह्व व बातिल से मुलव्वस नहीं होने देते, ऐसी मजालिस से ए'राज़ करते हैं। **132 :** ब त़रीक़े तग़ाफ़ुल (ग़फ़्लत करते हुए) **133 :** कि न सोचें न समझें बल्कि बगोशे होश सुनते हैं और ब चश्मे बसीरत देखते हैं और उस नसीहत से पन्द पज़ीर होते (नसीहत क़बूल करते) हैं, नफ़्अ़ उठाते हैं और उन आयतों पर फ़रमां बरदाराना गिरते हैं। **134 :** या'नी फ़रहत व सुरूर। मुराद येह है कि हमें बीबियां और औलाद, नेक सालेह मुत्तक़ी अ़त़ा फ़रमा कि उन के हुस्ने अ़मल और उन की इत़ाअ़ते ख़ुदा व रसूल देख कर हमारी आंखें ठन्डी और दिल ख़ुश हों। **135 :** या'नी हमें ऐसा परहेज़ गार और ऐसा आ़बिद व ख़ुदा परस्त बना कि हम परहेज़ गारों की पेश्वाई के क़ाबिल हों और वोह दीनी उमूर में हमारी इक़्तिदा करें। **मस्अला :** बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि इस में दलील है कि आदमी को दीनी पेश्वाई और सरदारी की रग़बत व त़लब चाहिये। इन आयात में **अल्लाह** तआ़ला ने अपने सालिह़ीन बन्दों के औसाफ़ ज़िक्र फ़रमाए, इस के बा'द उन की जज़ा ज़िक्र फ़रमाई जाती है। **136 :** मलाएका तह़िय्यत व तस्लीम के साथ उन की तक्रीम करेंगे, या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन की त़रफ़ सलाम भेजेगा। **137 :** ऐ सय्यिदे अम्बिया صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ! अहले मक्का से कि **138 :** मेरे रसूल और मेरी किताब को **139 :** या'नी अ़ज़ाबे दाइम व हलाके लाज़िम। **1 :** सूरए शुअ़राअ मक्किय्या है सिवाए आख़िर की चार आयतों के जो "وَالشُّعَرَآءُ يَتَّبِعُهُم" से शुरूअ़ होती हैं। इस सूरत में ग्यारह 11 रुकूअ़ और दो सो सत्ताईस 227 आयतें और एक हज़ार दो सो उनासी 1279 कलिमे और पांच हज़ार पांच सो चालीस 5540 ह़र्फ़ हैं।

www.dawateislami.net